

जीवन की नैया प्रभू पास चली रे ।
 चली रे चली रे प्रभू पास चली रे ॥
 दुनिया को छोड़ि के सब सों मुंह मोड़ के
 करुणा सिंधु स्वामी के पास चली रे ॥
 अपने अवगुण को देख नैया मेरी डोले
 मन का उमंग मेरा राम राम बोले
 कोई दे मुझ को बता मेरे प्रभू का पता
 बोलो मेरे रघुवर की कौन भली रे ॥१॥
 प्राणों के नाथ मेरे मिल जा जल्दी
 तेरी ओर व्याकुल हो नाव मेरी चलदी
 मैं हूं तेरा दास मुझे एक तेरी आस
 तेरी कृपा की मुझे आशा बली रे ॥२॥

शंकर उर मानस के हंस चरण जोई
 अंकुश जव बज्र कमल रेख सहित सोई
 गौतम की नारि का जिनने उधार किया
 तिनि पदों को देखुं जाय भांति गली रे ॥३॥

जिनि पद की पादुका भरत शीश धारी
जिनि की तपस्या भई दण्डक पावन कारी
प्रभु रघुनाथ चरण लाल कमल वरण
गोद धार लाली जेठ जनक लली रे ॥४॥

केवट के भीत हरी गीध गति दायक
शबरी सुखद ओ कपीश के सहायक
तिनि पद रज ध्याऊं जन्म जन्म शरण पाऊं
जिनकी कृपा की बेली फूली फली रे ॥५॥

मैं मति मंद भरे अघ हैं अगाधा सद बख़्शंद प्रभु जन के अपराधा
पाहि पाहि कहि पुकारूं नैननि सों नीर डारूं
पिघलेंगें अवश्य प्रभू प्रणत पली रे ॥६॥

अपना तो स्वार्थ में कबहूँ न चाहूँ सोई करूं सेवा जेहिं साहिब
सुहाऊं

श्री राम मेरी ओर ढरे कुमति सारी दूरि करे
ताड़िका जिन्होने एक बाण दली रे ॥७॥

प्रभू पद पद्म को जबहीं निहारूं तनम न सर्वस तबहीं मैं वारूं
रवि कुल रवि पास जाके भुवन मोहन दरस पाके
खिलि उठेगी आज मेरी हींअ की कली रे ॥८॥

उबरी जूठ दीन्ह प्रभु प्रसन्न होय पाऊं
उतरे पट भूषण को शीश पै चढ़ाऊं
मधुर गीत गाय गाय प्रेम नीर में नहाय
जिनको है रिझाती श्री मैगसि अली रे ॥९॥